Introduction

प्राक्कथन

प्रारंभ से ही मध्यमवर्गीय समाज विषयक साहित्य के अध्ययन के प्रति मेरी विशेष रूचि रही है। मध्यमवर्गीय जीवन से सम्बन्धित साठोत्तरी हिन्दी और गुजराती उपन्यासों ने मुझे गहराई से प्रभावित किया। पीएच.डी. में रजिस्ट्रेशन के लिए, मैं शोध–निर्देशिका डॉ. शैलजा भारद्वाज जी के पास पहुँची तो उन्होंने मेरी रूचि मध्यमवर्गीय उपन्यासों की तरफ देखी तो इसी विषय पर शोध करने की सलाह दी। इस पर मैंने साठोत्तरी हिन्दी और गुजराती उपन्यासों में मध्यमवर्ग पर शोध करने का प्रस्ताव रखा। इस प्रकार मेरे शोध के विषय की रूपरेखा बनती चली गयी।

हिन्दी और गुजराती भाषा के अधिकांश उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में मध्यमवर्गीय समाज और उनके जीवन को चित्रित किया है। इसके पीछे मूलभूत कारण यह है कि समस्त भारत के महत्वपूर्ण परिवर्तनों का सारा श्रेय मध्यमवर्ग को ही जाता है। प्रस्तुत शोध में भारतीय मध्यमवर्ग के स्वरूप, उसकी विशेषताओं की जाँच–पड़ताल प्रस्तुत की गई है। इस शोध प्रबंध में साठोत्तरी हिन्दी एवम् गुजराती उपन्यासों में मध्यमवर्गीय समाज में व्याप्त विसंगतियों, विविध समस्याओं, अंतर्द्वन्द्व, अंतःविरोधों, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक विषमताओं का आकलन किया गया है। यद्यपि हिन्दी उपन्यासों पर अनेक दृष्टियों से शोध हुआ है, लेकिन मध्यम वर्ग की मानसिकता, उसकी समस्याओं, जीवन–मूल्यों में निरंतर आते परिवर्तन की दृष्टि से शोध की अनेक संभावनाएँ हैं। मैंने अपने शोध में हिन्दी उपन्यासों एवम् गुजराती उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा अपनी स्थापनाएँ प्रस्तुत की हैं। यह कार्य अभी तक मेरी जानकारी में नितांत मौलिक है।

अपने इस शोध कार्य के लिए मैंने यथासम्भव पूर्वाग्रह रहित तटस्थ सामाजिक दृष्टिकोण अपनाया है। प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत मैंने निष्पक्ष विश्लेषण करने का प्रयास किया है। इस शोध–प्रबंध को उपसंहार सहित छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

अंत में कहना चाहूँगी कि उपन्यासों में समसामायिक मध्यमवर्गीय पारिवारिक जीवन पर शोध करने का मेरा स्वप्न शायद पूर्ण नहीं होता यदि मुझे श्रद्धेय गुरुजनों की प्रेरणा एवं सहयोग नहीं मिला होता। बाबजी की कृपा महेर हमेशा बनी रही।

'गुरु बिनु ज्ञान कबहुँ नहि होई।
कह गये कबीरा, तुलसी हर कोई।'

सचमुच, बिना गुरु के ज्ञान होना असंभव है। गुरु की महिमा अपरंपार है। गुरु ही एक सच्चा मार्गदर्शक है जो हमें लक्ष्य को पूर्ण करने में हमारी सहायता करता है। मार्ग में आनेवाली विघ्न–बाधाओं से लडने की क्षमता प्रदान करता है और ज्ञान दीपक को अपनी शक्ति के माध्यम से प्रदीप्त करता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को संपूर्ण करने में मुझे परम श्रद्धेय डॉ. शैलजा भारद्वाज की ममता और स्नेह की छाँव में रहकर की उनका दिशा–निर्देशन तथा प्रोत्साहन मिलता रहा। कई बार इस शोध के दौरान ही कुछ कठिनाईयाँ आयीं परंतु उन कठिनाइयों को दूर करने के लिए हमेशा मुझे अपनी ममता के सानिध्य में रखकर प्रोत्साहित करती रहीं। हमेशा जीवन में आगे बढने के लिए उत्साहित किया। यह शोध कार्य उनकी ममता और स्नेह के कारण ही सफल हो सकता है। आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता जीवन के कदम–कदम पर पड़ेगी और आपका हर निर्देशन मेरे जीवन का पथ प्रदर्शन बने। अतः गुरुचरणों में मेरा कोटि–कोटि वंदन स्वीकार हो।

मेरे पूजनीय माताश्री एवम् पिता के स्नेह, आशीर्वाद और प्रोत्साहन का ही सुपरिणाम है कि शोधकार्य मैं पूर्ण कर सकी। मेरी माताजी ने प्रारंभ से ही जीवन के हर क्षेत्र मे मेरा सहयोग दिया। हमेशा सही सलाह देकर जीवन में आगे बढने का मार्ग दिखाया। अतः पूजनीय माता–पिता के चरणों में मैं नत् मस्तक हूँ।

माता–पिता के अलावा मेरे जीवन साथी के सहयोग को भी भूली नहीं हूँ जिन्होंने समय समय पर मुझे इस शोधकार्य को पूर्ण करने का प्रोत्साहन दिया। उनको भी आत्मीयता एवम् श्रद्धापूर्वक चरणस्पर्श करती हूँ, उनका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। इस शोध–कार्य का प्रारंभ तब किया था जब मेरा सुपुत्र वेदान्त तीन मास का था। उसने भी अपनी यथाशक्ति समझ के अनुसार कभी भी मुझे इस शोधकार्य करने में परेशान नहीं किया। उसको भी मेरा बहुत प्यार। मेरे दोनों ही भाइयों एवम् भाभियों ने भी मुझे हृदय से इस शोध–कार्य को पूर्ण करने में मदद की है। मैं उनकी भी हृदय से ऋणी हूँ।

मैं महिला विद्यालय की श्रीमती हिरल पटेली की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे गुजराती साहित्य का काफी महत्वपूर्ण बातों का ज्ञान दिया। इसके साथ ही इस शोध कार्य में मदद करने वाले नामी–अनामी सदसेयं और मित्रों की मैं आभारी हूँ।

मैं श्रीमती हंसा मेहता लायब्रेरी एवम् कमाणी सायन्स एवम् आर्ट्स कॉलेज, अमरेली के सभी स्टाफ मेम्बर्स का भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मेरे विषयानुकूल पुस्तकें, विविध सामग्री उपलब्ध कराकर अपना सहयोग प्रदान किया।

अंत में उन कृतिकारों एवम् विद्वानों के प्रति आभारी हूँ जिनकी सृजनात्मक एवम् आलोचनात्मक पुस्तकों का उपयोग मैंने किया है।

विद्वानों से मेरा नम्र निवेदन है कि शोध की दिशा में किये गये मेरे इस छोटे से प्रयास को स्वीकार करें और अज्ञानतापूर्ण हुई त्रुटियों को उदार हृदय से क्षमा प्रदान करें।

विनीत

भावना पटेल